



ओमान में शिकंजे में आया महादेव बेटिंग नेटवर्क का कथित मास्टरमाइंड: 6,000 करोड़ के ऑनलाइन सट्टेबाजी सिंडिकेट पर बड़ी कार्रवाई, भारत प्रत्यर्पण की प्रक्रिया तेज

रायपुर। देश के बहुचर्चित महादेव ऑनलाइन सट्टेबाजी ऐप मामले में जांच एजेंसियों को बड़ी सफलता मिलने की खबर सामने आई है। लगभग 6,000 करोड़ रुपये के कथित ऑनलाइन सट्टेबाजी घोटाले के प्रमुख आरोपियों में शामिल सौरभ चंद्राकर को ओमान में हिरासत में लिए जाने की सूचना है। अधिकारियों के अनुसार, भारतीय एजेंसियों द्वारा जारी इंटरपोल नोटिस के आधार पर ओमान की रॉयल पुलिस ने उसे हिरासत में लिया है। हालांकि भारतीय एजेंसियां अभी आधिकारिक माध्यमों से इस कार्रवाई की पुष्टि और आवश्यक दस्तावेजी प्रक्रिया पूरी कर रही हैं। यदि प्रत्यर्पण प्रक्रिया सफल रहती है, तो कई वर्षों से विदेश में रह रहे इस आरोपी को भारत लाकर उससे जुड़े करोड़ों रुपये के वित्तीय लेनदेन, हवाला नेटवर्क, ऑनलाइन सट्टेबाजी तेज और कथित मनी लॉन्ड्रिंग के मामलों में पूछताछ का रास्ता साफ हो सकता है।

सूत्रों के अनुसार, जांच एजेंसियों को जानकारी मिली है कि सौरभ चंद्राकर हाल के समय तक संयुक्त अरब अमीरात (यूएई)

में मौजूद था। बाद में उसकी गतिविधियों का पता ओमान में चला, जहां उसे कथित तौर पर इंटरपोल की सूचना के आधार पर हिरासत में लिया गया। प्रारंभिक जानकारी में यह भी सामने आया है कि उसने दक्षिण-पूर्व एशिया के एक देश से प्राप्त कथित फर्जी पासपोर्ट का उपयोग कर ओमान में प्रवेश किया था। इस पहलू की भी जांच की जा रही है कि यात्रा दस्तावेज कैसे प्राप्त किए गए और इस प्रक्रिया में किन लोगों की भूमिका रही। धिकारियों के अनुसार भारत सरकार अब औपचारिक रूप से ओमान की राजधानी मस्कट को प्रत्यर्पण (एक्स्ट्राडिशन) का अनुरोध भेज रही है। चूंकि भारत और ओमान के बीच प्रत्यर्पण संधि लागू है, इसलिए जांच एजेंसियों को उम्मीद है कि कानूनी प्रक्रिया पूरी होने के बाद आरोपी को भारत लाने की संभावना पहले की तुलना में अधिक कमजूर है। हालांकि अंतिम निर्णय ओमान की न्यायिक और प्रशासनिक प्रक्रिया के अनुरूप ही होगा। इससे पहले भी वर्ष 2024 में सौरभ चंद्राकर को यूएई में इंटरपोल के रेड नोटिस के आधार पर हिरासत में लिया गया था। उस



समय भारत ने उसके प्रत्यर्पण का अनुरोध भी भेजा था, लेकिन विभिन्न कानूनी कारणों से वह प्रक्रिया पूरी नहीं हो सकी और बाद में उसे रिहा कर दिया गया। इसके बाद वह यूएई

से गायब हो गया था। अब ओमान में उसकी हिरासत की सूचना मिलने के बाद भारतीय एजेंसियों ने एक बार फिर उसे भारत लाने की प्रक्रिया तेज कर दी है।

महादेव ऑनलाइन सट्टेबाजी नेटवर्क पिछले कई वर्षों से देश की सबसे बड़ी आर्थिक अपराध जांचों में शामिल रहा है। जांच एजेंसियों के अनुसार सौरभ चंद्राकर और

उसके सहयोगी रवि उप्पल ने मिलकर एक ऐसे ऑनलाइन नेटवर्क का संचालन किया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में बड़े पैमाने पर अवैध सट्टेबाजी कराई जाती थी। मामले के सामने आने के बाद दोनों वर्ष 2019 में भारत छोड़कर दुबई चले गए थे। जांच एजेंसियों का आरोप है कि वहाँ से पूरे नेटवर्क का संचालन किया जाता रहा। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने इस मामले में दायर आरोपपत्रों में दावा किया है कि महादेव नेटवर्क के माध्यम से देश के विभिन्न शहरों में लगभग 3,200 सट्टेबाजी पैनल संचालित किए जा रहे थे। एजेंसी के अनुसार इस नेटवर्क से प्रतिदिन लगभग 240 करोड़ रुपये का अवैध कारोबार होने का अनुमान है। जांच में यह भी दावा किया गया है कि नेटवर्क से जुड़े हजारों कर्मचारियों के लिए दुबई में लगभग 20 विला किराए पर लिए गए थे, जहां से संचालन और तकनीकी गतिविधियां संचालित होती थीं।

जांच एजेंसियों का कहना है कि इस पूरे नेटवर्क के माध्यम से ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर क्रिकेट, फुटबॉल, टेनिस, बैडमिंटन, पोकर, अन्य ताश आधारित खेलों, भाग्य आधारित खेलों और यहां तक कि चुनावी नतीजों पर भी कथित तौर पर अवैध सट्टेबाजी कराई जाती थी। विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म, वेबसाइट और मोबाइल ऐप के जरिए देशभर में बड़ी संख्या में लोगों को इस नेटवर्क से जोड़ा गया। सरकार द्वारा कई प्लेटफॉर्मों पर प्रतिबंध लगाए जाने के बावजूद जांच एजेंसियों का दावा है कि नेटवर्क से जुड़े कुछ अवैध संचालन अब भी अलग-अलग माध्यमों से सक्रिय रहने की कोशिश कर रहे हैं। इस मामले में केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई), प्रवर्तन निदेशालय और छत्तीसगढ़ पुलिस अलग-अलग पहलुओं की जांच कर रहे हैं। जांच का दायरा केवल सट्टेबाजी नेटवर्क तक सीमित नहीं है, बल्कि कथित हवाला लेनदेन, मनी लॉन्ड्रिंग, सरकारी अधिकारियों की संभावित भूमिका, वित्तीय अनियमितताओं और अवैध संपत्तियों तक भी विस्तारित किया गया है। रायपुर सहित कई स्थानों पर समय-समय पर छापेमारी और पूछताछ की कार्रवाई भी की जा चुकी है। कानून विशेषज्ञों का मानना है

कि यदि सौरभ चंद्राकर का प्रत्यर्पण सफल होता है, तो यह जांच के लिए महत्वपूर्ण मोड़ साबित हो सकता है। उससे पूछताछ के आधार पर नेटवर्क की संरचना, धन के प्रवाह, अंतरराष्ट्रीय संपर्कों, तकनीकी संचालन और अन्य सहयोगियों के संबंध में नई जानकारी सामने आने की संभावना है। साथ ही जांच एजेंसियां यह भी पता लगाने का प्रयास करेंगी कि प्रतिबंधों के बावजूद नेटवर्क के कुछ हिस्से किस प्रकार सक्रिय रहे और उसके संचालन के लिए किन माध्यमों का उपयोग किया जाता रहा। फिलहाल भारतीय एजेंसियां ओमान के अधिकारियों के साथ कानूनी और राजनयिक स्तर पर आवश्यक प्रक्रिया पूरी करने में जुटी हैं। प्रत्यर्पण की कार्यवाही पूरी होने के बाद ही सौरभ चंद्राकर को भारत लाया जा सकेगा। मामले की संवेदनशीलता और अंतरराष्ट्रीय आयामों को देखते हुए जांच एजेंसियां प्रत्येक कदम कानूनी प्रक्रिया के अनुरूप उठा रही हैं। यदि प्रत्यर्पण सफल रहता है, तो महादेव ऑनलाइन सट्टेबाजी मामले की जांच को नई दिशा मिलने की संभावना मानी जा रही है।

ऑनलाइन कट्टरपंथी नेटवर्क पर एनआईए का देशव्यापी शिकंजा: 10 राज्यों में 20 ठिकानों पर एक साथ छापे, डिजिटल साक्ष्यों के जरिए पूरे मॉड्यूल की जांच तेज

नई दिल्ली। देश में ऑनलाइन माध्यमों के जरिए युवाओं को कट्टरपंथ की ओर आकर्षित करने और प्रतिबंधित आतंकवादी संगठनों की विचारधारा फैलाने के कथित नेटवर्क के खिलाफ राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने बुधवार को बड़े पैमाने पर कार्रवाई करते हुए 10 राज्यों के 20 स्थानों पर एक साथ छापेमारी की। इस समन्वित अभियान के दौरान जांच एजेंसी ने कई डिजिटल उपकरण, इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य और अन्य महत्वपूर्ण सामग्री जब्त की है, जिनकी अब फॉरेंसिक जांच कर पूरे नेटवर्क की गतिविधियों का पता लगाया जाएगा। यह कार्रवाई कैसे संख्या RC-01/2026/NIA/VSKP के तहत की गई, जिसकी जांच एनआईए कर रही है। जांच एजेंसी के अनुसार यह मामला ऑनलाइन कट्टरपंथी गतिविधियों, डिजिटल प्रचार और प्रतिबंधित आतंकवादी संगठनों की विचारधारा फैलाने के कथित प्रयासों से जुड़ा है। प्रारंभिक जांच में ऐसे संकेत मिले हैं कि कुछ सदिश इंटरनेट और सोशल मीडिया जैसे डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर युवाओं तक उग्रवादी प्रचार सामग्री पहुंचाने तथा उन्हें कट्टरपंथी विचारधारा से प्रभावित करने की कोशिश कर रहे थे। इसी आधार पर विभिन्न राज्यों में एक साथ तलाशी अभियान चलाया गया। एनआईए की विशेष टीमों ने आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश,



पश्चिम बंगाल, बिहार, राजस्थान, गुजरात और दिल्ली में एक साथ कार्रवाई की। विभिन्न स्थानों पर स्थानीय पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों के सहयोग से तलाशी ली गई। अधिकारियों के अनुसार इस तरह की समन्वित कार्रवाई का उद्देश्य सदिशों को डिजिटल साक्ष्य नष्ट करने का अवसर दिए बिना एक साथ कार्रवाई करना और पूरे नेटवर्क की कड़ियों तक पहुंचना था। जांच एजेंसी का कहना है कि कुछ सदिश प्रतिबंधित आतंकवादी संगठनों इस्लामिक स्टेट (आईएस) और अल-कायदा से जुड़ी कथित विचारधारा का ऑनलाइन प्रचार-प्रसार कर रहे थे। एजेंसी के अनुसार जांच के इस बात पर केंद्रित है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग किस प्रकार कथित रूप से युवाओं को प्रभावित करने, उन्हें उग्रवादी प्रचार उपलब्ध कराने और ऑनलाइन संयुक्त स्थापित करने के लिए किया जा रहा था। छापेमारी के दौरान जब्त किए गए मोबाइल

फोन, लैपटॉप, हार्ड डिस्क, स्टोरेज डिवाइस और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को फॉरेंसिक जांच के लिए भेजा गया है। तकनीकी विशेषज्ञ इन उपकरणों से प्राप्त डेटा का विश्लेषण कर रहे हैं ताकि सदिशों के बीच हुए डिजिटल संवाद, सोशल मीडिया गतिविधियों, एन्क्रिप्टेड संचार, विदेशी संपर्कों और अन्य संभावित डिजिटल साक्ष्यों का पता लगाया जा सके। जांच एजेंसी का मानना है कि इन उपकरणों से पूरे नेटवर्क की कार्यशैली और उससे जुड़े अन्य लोगों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिल सकती है। एनआईए ने बताया कि इस मामले में अब तक 11 आरोपियों और एक नाबालिग को गिरफ्तार किया जा चुका है। एजेंसी ने मई 2026 में यह मामला विजयवाड़ा पुलिस से अपने हाथ में लिया था। इससे पहले मार्च 2026 में विजयवाड़ा पुलिस ने मुख्य आरोपी रहमतुल्लाह शरीफ मोहम्मद के घर पर तलाशी अभियान चलाया था। तलाशी के दौरान कथित तौर पर प्रतिबंधित आतंकवादी संगठनों अल-कायदा इन द इंडियन सबकॉन्टिनेंट (एक्यूआईएस) और इस्लामिक स्टेट से संबंधित आपत्तिजनक सामग्री मिलने के बाद मामला दर्ज किया गया था। बाद में मामले की गंभीरता को देखते हुए

इसकी जांच एनआईए को सौंप दी गई। जांच एजेंसी के अनुसार अब तक की जांच में यह संकेत भी मिले हैं कि गिरफ्तार आरोपी और उनके कुछ सहयोगी विदेश में मौजूद कथित हैडलरों के संपर्क में थे। प्रारंभिक जांच के अनुसार डिजिटल माध्यमों के जरिए कथित रूप से हिंसक जिहादी प्रचार सामग्री साझा की जा रही थी और युवाओं को भ्रामक संदेशों के माध्यम से प्रभावित करने का प्रयास किया जा रहा था। एजेंसी इस पहलू की भी जांच कर रही है कि विदेशी संपर्क किस स्तर तक सक्रिय थे और उनका भारत में मौजूद सदिशों से किस प्रकार का संवाद था। एनआईए का कहना है कि जांच अभी प्रारंभिक लेकिन महत्वपूर्ण चरण में है। जब्त किए गए डिजिटल साक्ष्यों की फॉरेंसिक रिपोर्ट, तकनीकी विश्लेषण और अन्य इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड के आधार पर पूरे नेटवर्क की संरचना, संपर्क सूत्रों, वित्तीय लेनदेन (यदि कोई हो), डिजिटल प्लेटफॉर्म के उपयोग तथा कथित गतिविधियों के दायरे का पता लगाया जाएगा। एजेंसी उन सभी व्यक्तियों की पहचान करने का प्रयास कर रही है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस कथित नेटवर्क से जुड़े हो सकते हैं। सुरक्षा एजेंसियों का मानना है कि इंटरनेट और सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग के साथ ऑनलाइन कट्टरपंथी प्रचार एक बड़ी चुनौती बनकर उभर रहा है।

नई दिल्ली। अयोध्या स्थित राम मंदिर में चढ़ावे से जुड़ी कथित अनियमितताओं को लेकर राजनीतिक विवाद गहराता जा रहा है। बुधवार को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इस मुद्दे पर केंद्र सरकार और मंदिर ट्रस्ट पर तीखा हमला बोलते हुए राम मंदिर ट्रस्ट के पूर्व महासचिव चंपत राय की तत्काल गिरफ्तारी की मांग की। पार्टी ने आरोप लगाया कि मामले की निष्पक्ष जांच सुनिश्चित करने के लिए पूरे प्रकरण की सुनवाई और जांच भारत का सर्वोच्च न्यायालय की निगरानी में कराई जानी चाहिए। कांग्रेस का कहना है कि यदि चढ़ावे में कथित हेराफेरी के आरोप सामने आए हैं तो उनकी निष्पक्ष, पारदर्शी और समयबद्ध जांच होना आवश्यक है। पार्टी नेताओं ने मांग की कि जांच पूरी होने तक संबंधित जिम्मेदार व्यक्तियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाए और यदि आरोप सही पाए जाते हैं तो दोषियों को कड़ी सजा दी जाए। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने इस मुद्दे पर केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री पर निशाना साधते हुए कहा कि जब राम मंदिर निर्माण का श्रेय लेने की बात आती है तो प्रधानमंत्री सबसे आगे दिखाई देते हैं, लेकिन अब चढ़ावे में कथित अनियमितताओं के आरोपों पर



उनकी चुप्पी कई सवाल खड़े करती है। उन्होंने कहा कि यदि इस मामले में गंभीर आरोप लगे हैं तो सरकार को अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए और निष्पक्ष जांच का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए। जयराम रमेश ने सोशल मीडिया पर जारी अपने बयान में कांग्रेस की ओर से कई मांगें रखीं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व सांसद

मामले की जांच सर्वोच्च न्यायालय की निगरानी में कराई जाए, कथित दोषियों के खिलाफ तत्काल कार्रवाई की जाए, एक नया ट्रस्ट गठित किया जाए तथा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश के सामने इस मुद्दे पर अपनी स्थिति स्पष्ट करें। उन्होंने प्रधानमंत्री से इस मामले की सार्वजनिक रूप से प्रतिक्रिया देने की भी मांग की। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व सांसद

शक्ति सिंह गोहिल ने भी प्रेस वार्ता के दौरान यही मांग दोहराई। उन्होंने कहा कि धार्मिक आस्था से जुड़े किसी भी संस्थान में वित्तीय पारदर्शिता अत्यंत आवश्यक है और यदि किसी प्रकार की अनियमितता के आरोप सामने आते हैं तो उनकी स्वतंत्र और निष्पक्ष जांच कराई जानी चाहिए। उनके अनुसार, सर्वोच्च न्यायालय की निगरानी में जांच होने से पूरे मामले की निष्पक्षता पर लोगों का विश्वास बना रहेगा। फिलहाल कांग्रेस द्वारा लगाए गए इन आरोपों और मांगों पर संबंधित पक्षों की ओर से आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने आना बाकी है। साथ ही, इन आरोपों की सत्यता का निर्धारण जांच प्रक्रिया और संबंधित सक्षम प्राधिकारियों की कार्रवाई के बाद ही हो सकेगा। मामला राजनीतिक और सार्वजनिक दोनों स्तरों पर चर्चा का विषय बना हुआ है।

2006 में सूत में आई बाढ़ की आपदा के बाद भी प्रशासन की लापरवाही जारी रही और बारिश के पानी के निपटान को लेकर फिर से सवाल उठने लगे

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूत। वर्ष 2006 में सूत में हुए भीषण रेल हादसे में तत्कालीन गुजरात राज्य जल आपूर्ति मंत्री नरोत्तमभाई पटेल की आपराधिक लापरवाही और अधिकारियों की मिलीभगत के कारण करोड़ों रुपये का नुकसान हुआ और हजारों जानवरों की जान चली गई। इस हादसे में तापी नदी के किनारे बसे कई लोगों के घर, झोपड़ियां, गाय-बैस, भेड़-बकरियों के बाड़े, जिन पर उनकी आजीवनिका निर्भर थी, रेल के पानी में बह गए। तापी नदी पर बने उकाई बांध का पानी किसानों के लिए कृषि के लिए उपयोगी है, लेकिन बांध में बढ़ते जल स्तर को नियंत्रित करने में प्रशासनिक व्यवस्था पूरी तरह विफल रही है। तापी नदी के ऊपरी इलाकों में जल प्रवाह बढ़ने पर जल स्तर को समय-समय पर नियंत्रित करना आवश्यक है। लेकिन सरकारी व्यवस्था, सरकारी अधिकारियों या मंत्रियों ने कभी इस दिशा में सोचा ही नहीं। यह स्वाभाविक है कि बारिश के दौरान तापी नदी, कांकरापार नाला या अन्य नालों में पानी भर जाता है। लेकिन जब प्रशासनिक व्यवस्था पूरी तरह से लापरवाह हो और पानी के निपटान में विफल हो जाए, तो बाढ़ आ जाती है। सूत शहर की बात करें तो, ये नाले कांकरापार नाले, मीठी नाले और कोयली नाले के आसपास से होकर गुजरते हैं। वहां से लेकर समुद्र में मिलने तक, दोनों किनारों पर स्वार्थी लोगों ने भ्रष्ट व्यवस्था के साथ मिलीभगत करके दोनों किनारों पर इतना दबाव बना रखा है कि पानी का प्रवाह रुक गया है। इस तथ्य से



भलीभांति अवगत होने के बावजूद कि सरकारी व्यवस्था, अधिकारी, नगर निगम के प्रदाधिकारी, सरकारी मंत्री और उच्च अधिकारी इस दिशा में कोई सम्योचित और उचित कार्रवाई नहीं की जाती है। परिणामस्वरूप, हर साल थोड़ी सी बारिश में भी सूत शहर में पानी भर जाता है। सूत नगर निगम की व्यवस्था इतनी विफल हो चुकी है कि दो से पांच इंच बारिश में भी पूरा शहर जलमग्न हो जाता है। जिसके कारण स्कूल और कॉलेज बंद करने पड़ते हैं। 70 लाख से अधिक आबादी वाले सूत शहर में जन्म और मृत्यु अनिश्चित हैं। कई जगहों पर जलभराव के कारण गर्भवती महिलाओं या अन्य मरीजों को आपातकालीन स्थिति में एम्बुलेंस या निजी वाहन से अस्पताल ले जाने में कठिनाई का सामना करना पड़ता

है। यहां तक कि मृत्यु के समय भी शमशान घाट या निजी वाहनों को काफी परेशानी झेलनी पड़ती है। बार-बार ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होने के बावजूद, नगर निगम और सरकारी व्यवस्था नाले के पानी को अवरुद्ध करने वाले निर्माणों को हटाने में विफल रही है। सरकार और नगर निगम की लापरवाही के कारण सूत शहर में एक भारी रेलगाड़ी आई और इस रेलगाड़ी का कोई कर्मचारी परिस्थितियों या बीमारी के कारण अपना कर्तव्य नहीं निभा सका, तो नगर निगम व्यवस्था ने उसे स्थायी रूप से बर्खास्त कर दिया। और आज उसका परिवार सड़क पर आ गया है। 2006 में आई यह रेलगाड़ी प्राकृतिक रेलगाड़ी नहीं थी, लेकिन राज्य सरकार के तत्कालीन पूर्व कैबिनेट मंत्री नरोत्तमभाई पटेल के

आदेशों और तत्कालीन कलेक्टर की प्रणतियों और एम.एन.पी. की नाफटा गलती के कारण सरकार ने 2006 में आई रेलगाड़ी के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की। सूत नगर निगम ने करोड़ों रुपये खर्च करके वर्षा जल निकासी नालियां बनवाई हैं। लेकिन समय-समय पर इनकी सफाई न होने के कारण जल प्रवाह रुक जाता है। वर्षा जल के उचित निकास के कारण पूरा सूत शहर जलमग्न हो जाता है और नागरिकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। सूत नगर निगम के अधिकारियों को इस बात का स्पष्ट ज्ञान नहीं है कि वे जानबूझकर ऐसी लापरवाही बरत रहे हैं। इसी कारण वर्ष 2006 की भारी बारिश के बाद भी सरकार और नगर निगम की यह लापरवाही जारी है।

गरवी गुजरात हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO. 2002

Jio FIBER

Jio tv+

Jio Fiber

Daily Hunt

ebaba Tv

Dish Plus

DTH live OTT

Rock TV

Airtel

Amezone Fire

Roku Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार प्राप्त करने के लिए आज ही गरवी गुजरात हिंदी चैनल देखिये

संपादकीय

शर्मसार हैं हम

आप ही देखें कि देश का प्रिंट मीडिया स लेकर अन्य समाजवादी माध्यमों में यौन अपराधों को विचलित करने वाली घटनाएं सुर्खियों में रहती हैं। यौन लिप्साओं का यह विस्फोट विचलित करने वाला है। कोई नियाय, किसी के साहस के बूते अपने साथ हट्ट अनायास को उज्जागर कर देती है, वही देश को अनेक निर्भयाएं—यौन हिंसा व क्रूरता के बावजूद गुमनामी के अधरे में त्रास घेरने को अभिशप्त हो जाती है। हाल की दो घटनाओं ने पूरे देश को झकझोर कर डाल दिया। श्रीगंगानगर के श्रीगंगानगर में बारह वर्षीय बालिका को चार दिन बंधक बनाकर दो दर्जन लोगों द्वारा दुराचार किया गया। इस मामले में 18 अभियुक्त गिरफ्तार किए गए हैं और कुछ गिरफ्तारियां बाकी हैं। दूसरी घटना पश्चिम बंगाल की है जहां बारहवर्षीय में एक किशोरी के साथ सामूहिक दुष्कर्म के बाद हत्या कर दी गई। शव परीक्षण में पाया गया कि उसके सिर व निजी अंगों पर गंभीर चोटें थीं। इतना ही नहीं, दुराचार के बाद उसके बोरों में बंद करके जिंदा ही तालाब में डुबो दिया गया। दोनों ही घटनाएं विचलित करने वाली हैं, लेकिन श्रीगंगानगर की घटना हर संवेदनशील इंसान को हिला देने वाली है। जनाक्रोश के चलते प्रशासन ने न केवल 18 लोगों को गिरफ्तार किया बल्कि उन हटलों को भी ध्वस्त किया गया जहां अलग-अलग जगहों में बच्ची को बंधक बनाकर दो दह व्यापार करायी गयीं। निरसंह, मोबाइल के बटने हस्तक्षेप से परिवार संस्था की चूल्हे हिली नजर आती हैं। कथित सोशल मीडिया समाज में विद्रुताओं को जन्म दे रहा है। श्रीगंगानगर की बारह वर्षीय लड़की शहर से सी किमो डूरे अपने एक इंस्टाग्राम फ्रेंड से मिलने जाती है, जो उसके वहां दुराचार करता है। वहां से देर रात शहर लौटने पर एक रिक्शेवाले के झंसे में आकर होटल पहुंचती है और फिर उसके साथ दुराचार का अंतहीन सिलसिला शुरू हो जाता है। परिजनों के लापता किशोरी के तलाश में अपने पहुंचने के बाद पुलिस हरकत में आती है, फिर उसे मुक्त करायी जाता है।

है। इस राक्षसी कृत्य से उद्वेलित लोग श्रीगंगानगर की सड़कों पर उतर आए। भूध्व लीगे ने मशाल जुलूस निकालकर कानून के खयालों के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया। जनाक्रोश को देखते हुए 18 लोगों की गिरफ्तारी हुई। कुछ और गिरफ्तारीयों को सहती हैं।

लेलेलेकिन सवाल यह कि भारतीय समाज में हो रहे यौन शोषणों के पिछेकोट की वजह क्या है? ये नैतिक पतन की पराक्रमा क्यां हो रहे? हवस के भूछे भिषन न उच रहते हैं, न किसी बेटी की बेवसी। उस किशोरी के साथ हुई बर्बता के बारे में सोचकर भी स्वरू कांपती है। जो शापद ही जीवनभर इस त्रासदी से उबर पाये। कहीं न कहीं इंटरनेट व सोशल मीडिया पर यौन खच्छंदता की पिछिम की आंधी हमारे समाज को पतित कर रही है। हमारे परंपरागत शुशुता के परिश्रतो को तार-तार करके निरंकुश व्यवहार को तारातारिक बेवानी की सोशिया स्त्री जा रही है। हम बच्चों को रामराज के संस्कार देते हैं, जबकि समाज में दादनामज का चर्वस्व बढ़ता जा रहा है। बच्चों को भी व्यात्याग-तप्पस्या से आलाना पालन करने वाले मां-पा को बजाय आभासी दुनिया के छव मित्र रास से लालें हैं। जिसके सम्मोहन में यह किशोरी घर से निकली और उसका पहला शिकार बनी। हवस के भेड़िये भी परिस्थितियों की मारी मनुकियों की ही अपने शिकंजे में लेते हैं। ऐसे में बेटीयों को भी घर से निकलते वक्त असमय की संवेदनशीलता और लोगों की विषयवजाना को परखना चाहिए। घर वालों से चोरी-छिपे अनजानता पर यकीन करने की वजह से अकसर बेटीयों अपराधियों की आसान शिकार बनती हैं। यौन अपराधों के उफान के दौर में पुलिस और स्त्री शिक्षा से जुड़ी एजेण्सीयों ने इसे दूर की चर्च चुनौतियों के मुताबिक तैयार करना होगा। नयमें चाइस्ट लेवलफेयर से जुड़ी संस्थाओं की सज्जता-सक्रियता बढ़ाते तथा पोषकों व जुवेनाइल जस्टिस स्कूल को सख्त बनाने की जरूरत है। अभिभावार व स्कूल-कालेज बच्चियों को यौन-हिंसा से बचने और आत्मरक्षा से जुड़े विषयों पर गंभीर हई चर्चा करे। यदि इस दिशा में गंभीर पहल नहीं हुई तो पिछिमोदियों द्वारा भारत पर लगाए जा रहे 'रेप कैपिटल' के आरोप हकीकत समझे जायें लगेगें।

अभियान

अवतिका के 84 शि

भारत की पवित्र भूमि पर ऐसे अनेक तीर्थ हैं, जिनकी यात्रा केवल धार्मिक परंपरा नहीं बल्कि आधुनिक जगत् का माध्यम मानी जाती है। इन तीर्थों में अर्ध प्रवेश की प्राचीन नगरी उज्जैन का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। शिखर नदी के पवन तट पर बसी यह नगरी हजारों वर्षों से धर्म, दर्शन, ज्योतिष, तंत्र, साधना और शिवभक्ति का प्रमुख केंद्र रही है। उज्जैन का नाम लेते ही सबसे पहले भागवान महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग की छवि मन में उभरती है। देश-विदेश से करोड़ों भक्त आकर भागवान महाकालेश्वर की दर्शन करने यहां पहुंचते हैं, लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि उज्जैन की आध्यात्मिक पहचान केवल महाकालेश्वर तक सीमित नहीं है। इस प्राचीन नगरी की गलियों, घाटों, पुराने महेल्लों और आपसफ के क्षेत्रों में भागवान शिव के 84 प्राचीन स्वरूप विराजमान हैं। इन सभी मंदिरों के दर्शन को “84 महादेव यात्रा” या “84 महादेव परिक्रमा” कहा जाता है। धार्मिक मान्यता है कि महाकाल की नगरी में आने वाला भक्ताल यह इन सभी शिवलिंगों के दर्शन करता है, तो उसकी यात्रा पूर्ण मानी जाती है और उसे विशेष आध्यात्मिक पुण्य की प्राप्ति होती है।

उज्जैन को प्राचीन काल में अवतिका, उज्जयिनी और कुमुदवती जैसे नामों से जाना जाता था। यह भारत की सत्तरीयों में शामिल है, अर्थात् ऐसी सात पवित्र नगरों जिन्हें महाभारत नामा गया है। स्वयं पुराण के अवत खंड में इन क्षेत्र का

विस्तृत वर्णन मिलता है। स्वयं महाकालेश्वर की कथाओं के अनुसार प्राचीन पर भागवान कमरुधती बनाया प्रसन्न होकर संसार के साथ इन दिव्य हनुओं और आज यह का आधार हैं।

84 महादेव यात्रा अत्यंत गहरा है। यैनीयों का उल्लेख की जाये अनेक न करता है। इसलिये लंबी आध्यात्मिक शिष्य में मनुष्य की त्यागकर मोक्ष की संतो का है। वही, बल्लभ मन, नही साधना है। यात्रा की शुरुआत महादेव से होती गृहेश्वर महादेव, महादेव, स्वयंभवा महादेव, धारके महादेव, कपरो महादेव, कुंडलेश महादेव, केशर महादेव

અટલાં

एक नई रिसर्च से पता चलता है कि उत्तरी अटलांटिक महासागर में पानी के एक ठंडे हिस्से ने जेट स्ट्रीम हवाओं के जरिए भारतीय गर्मियों के मॉनसून में बदलाव शुरू कर दिए हैं। इससे करोड़ों लोगों की रोजी-रोटी को खतरा पैदा हो गया है।

प्रेरणा

विश्ववास मनुष्य के जीवन की सबसे बड़ी आशा और नैतिक शक्ति है। यह केवल किम्वदंती या कल्पना का नाम नहीं, बल्कि अपने उद्देश्य, आशय और अपने संबंधों और सबसे बढ़कर ईश्वर पर अडिग रहने का नाम है। जिस व्यक्ति के जीवन में विश्ववास है, वह कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी दृढ़तापूर्वक विश्वास रखे और प्रेरणा लेता है कि हर अंधेरी रात उजाला अवश्य आएगा। विश्वास वह अदृश्य शक्ति है जो निराशा से आशा की ओर, भय से आशा और असफलता से सफलता की ओर ले जाता है। पुरुषों में अनेक प्रसंग ऐसे मिलते हैं जो बताते हैं कि भावना केवल पुष्पा-पाठ या बाहरी आदर्श नहीं होती, बल्कि वह अपने प्रभुत्व के प्रमाण विश्व में फैली है। ऐसा ही एक अत्यंत प्रसिद्ध विचार श्री श्रीकृष्ण और माता रक्मिणी का है। एक बार देवी ने भावना रक्मिणी से पूछा, "श्रीकृष्ण इस संसार में सबसे बड़ा भक्त कौन है?" सम्मन्य रूप से हमें यह ज्ञात है कि देवी उक्त आकांक्षी, मीरा, यशोदा या अर्जुन जैसे श्रीकृष्ण ने मुसुकुराकर कहा, "रक्मिणी! मैं जानता हूँ यह उक्त सुनकर चिन्ता रह जाए। निरमल से पूछा, "पूछो! ऐसा क्यों? रक्मिणी ने विश्वास व्यक्त किया कि श्रीकृष्ण ने जो उक्त दिया, वह किसी की वास्तविक परिभाषा बन गया। उन्होंने कहा, "देखो पुरुषों से पहले ही अपना मात लिखा था। मैं मुझे तक नहीं जाना, फिर भी उसे विश्वास था कि कभी निराशा नहीं करूंगा।"

मानसून हमारी जीवन रेखा है। भारत और दक्षिण एशिया के दूसरे हिस्सों में 1 अरब से अधिक लोग खाद्य सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता के लिए मानसून पर निर्भर हैं। हर साल हम एक अच्छे मानसून की प्रतीक्षा करते हैं। लेकिन वैज्ञानिकों ने पाया है कि पिछले कुछ वर्षों से भारतीय मानसून के पैटर्न में परिवर्तन हो रहा है। वैज्ञानिक इस बदलाव के कारणों को जानने की कोशिश कर रहे हैं। अब एक नई रिसर्च से पता चलता है कि उत्तरी अटलांटिक महासागर में पानी के एक ठंडे हिस्से ने जेट स्ट्रीम हवाओं के जरिए भारतीय गर्मियों के मानसून में बदलाव शुरू कर दिए हैं। इससे कैरोटों लोगों की रोजी-रोटी को खतरा पैदा हो गया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इन दोनों प्रणालियों के बीच का संबंध एक ऐसे पहले से अज्ञात संबंध को दिखाता है जो दक्षिण एशिया में मौसम के अनुमानों को जानकारी दे सकता है और दूसरी जगहों पर मौसम की घटनाओं पर रोशनी डाल सकता है।

थ्यान रहते कि जेट स्ट्रीम हवाएं पृथ्वी के वायुमंडल में 9 से 16 किलोमीटर की ऊंचाई पर बहने वाली तेज गति वाली, चक्रवाती वायुधाराएं हैं। तापमान के अंतर और पृथ्वी के घूर्णन से संचालित ये हवाएं वायुमंडलीय सीमाओं के रूप में कार्य करती हैं जो वैश्विक मौसम के पैटर्न को अकार देती हैं और वाणिज्यिक विमान मार्गों को प्रभावित करती हैं।

भारतीय गर्मियों का मानसून वर्षा का एक पैटर्न है जो जून से सितंबर तक रहता है और यह गर्म जूनरी हिंद महासागर और भूमध्य रेखा के नीचे ठंडे समुद्री पानी के बीच तापमान के अंतर से चलता है। शुरू में, मानसून ने भारत के पश्चिमी

को परंपराएं—स्वयं उसके सामने नहीं थीं। फिर भी नहीं माने। उसने भावना श्रीकृष्ण को एक फल प्राप्त उस पत्र में शब्द बहुत कम थे, लेकिन वह समझ था। उसने लिखा कि “मुझे पूर्ण विश्वास है कि अश्वय जीओ।” यदि किसी कारणवश आप नहीं तब भी मैं जीवनभर किसी और आपना नहीं करूँ, यह केवल एक पत्र नहीं था, बल्कि श्रद्धा, सच्चा अदृष्ट विश्वास की घोषणा थी। भावना श्रीकृष्ण को कहा कि “जो व्यक्ति तुम्हारे विश्वास के योग्य है, पर विश्वास करना सामान्य बात है, लेकिन विश्वास के कारण स्वयं को उस विश्वास के दे, वही सच्चा विश्वास है।” रमिष्णु के विश्वास भावना को उसके पास आने के लिए प्रेरित किया श्रीकृष्ण आप, रमिष्णु का हरण किया और आधुनिक बनाया। यह घटना केवल एक पौराणिक नहीं, बल्कि यह संदेश है कि जहाँ विश्वास सच नहीं है ईश्वर स्वयं काम बनाते हैं। आज के समय में मनुष्य के पास धन है, साधन हैं और तकनीक है, लेकिन सबसे अधिक कर्म नहीं है। लोग अपने संबंधों पर विश्वास नहीं कर जाते। पर विश्वास संबंधों के बिना, स्वयं पर विश्वास नहीं करते और धीरे-धीरे ईश्वर पर भी उनका भरोसा कम हो पड़ने लगता है। परिणाम यह होता है कि विश्वास किताबों भी उन्हें छोड़ देती है। जबकि विश्वास वाला व्यक्ति बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी मुस्कुराता क्योंकि उसे मालूम होता है कि यह समय भी बीत जाएगा। विश्वास का वास्तविक अर्थ किताबों के बीच भी मन डुमामाना नहीं है।



ए और उत्तरी भारत के एक बड़े इलाके में गंगा के मैदान) में भारी बारिश शुरू हो गई थी। लेकिन 1999 से यह पैटर्न बहुत बदल गया है। शोधकर्ताओं ने एक नए अध्ययन में पाया कि उत्तर-पश्चिम भारत में अब मानसून सीजन में 1999 से पहले के मुकाबले लगभग 25 प्रतिशत ज्यादा बारिश गिराई जाती है, जबकि गंगा के मैदानी इलाकों में लगभग 4 प्रतिशत कम बारिश होती है।

स अध्ययन के पहले लेखक और भारतीय विज्ञान संस्थान के जलवायु वैज्ञानिक महेंद्र निम्माकांति ने कहा कि यह परिवर्तन किसानों के लिए खास तौर पर बहुत बुरा है, क्योंकि उनके खेतों की मेढ़ी और फसलें बारिश के पुराने पैटर्न के हिसाब से ढल गई हैं। उन्होंने कहा कि भारत काफी हद तक खेती पर निर्भर है। उत्तर-पश्चिम भारत में सामान्य से

मथिक बारिश होने पर अचानक बाढ़ आ जाती है और फसलों का नुकसान होता है, क्योंकि इस इलाके की खेती सूखे से गलत के हिसाब से ढल गई है। इस क्षेत्र, गंगा के मैदानी इलाकों में सूखे के दौरान भी आए हैं, जिससे फसलों में भी काफी आई है और किसानों की रोजी-रोटी पर असर पड़ा है।

पहले अध्वनी ने भारतीय मॉनसून में परिवर्तन को अटलांटिक में रेडियनल ओवरनर्निंग सर्कुलेशन (एएमओसी) में बदलाव से जोड़ा था। एएमओसी अटलांटिक में समुद्री धाराओं का एक अटलांट जाल है जो वैश्विक जलवायु को नियंत्रित करता है और उत्तरी गोलार्द्ध में मौल पड़ता है। आंकड़े बताते हैं कि जलवायु परिवर्तन की वजह से एएमओसी की तीव्रता हो रहा है और उत्तरी अटलांटिक महासागर में पहले के मुकाबले कम गर्मी

जहाँ इसलिये मैं हुँ। इतना व्यर्थ कि वह पानी नहीं है, बल्कि तब इतना है जब पानी उसके भीतर जाता है। उसी प्रकार जीवन भी सम्पन्न है। हमें मजबूत बनानी है, लेकिन हम हम अपने विश्वास को खो देते हैं, तब वहीं सम्पत्ति हमें अंतर्गत है। भगवान राम के जीवन में भी विश्वास इतना कि दिखाई देता है। माला शरीर वही तब आश्रम को सजाती थीं। उन्हें नहीं पता था कि क्या आगे, लेकिन उन्हें यह विश्वास था कि उस अर्थ्य आगे, वहीं विश्वास उन्हें प्रतिदिन उत्साहित करता था। अंततः भगवान राम उन्हें उनके आश्रम और उनके प्रेम से अंतर्गत करे प्रह्लाद किए। वहीं मन में प्रेम न होता, तो शायद वह वहीं निष्ठा के साथ प्रतीति नहीं कर पातीं। हमारा पूरा जीवन भी विश्वास का ही उदाहरण है। पर करने का समय आया, तब उन्होंने अपने प्रदर्शन नहीं किया, बल्कि पहले श्रीराम को अपने उन्हें अपने बल से अधिक श्रीराम के नाम पर किया। यही कारण है कि असंभव प्रतीत होने वाला सहज हो गया। यह हमें सिखाता है कि जब आगे के साथ ईश्वर पर विश्वास जुड़ जाता है, तब निश्चित हो जाती है। महाभारत में द्रौपदी का प्रसंग शिक्षा देता है। जब सभा में उसका चौराहर हो तब उसने प्रतीत अपने बल, लेकिन संबंधियों का प्रयास पर परेखा किया। लेकिन जब सब सच गया, तब उसने दोनों हाथ उठाकर पूरी श्रद्धा और श्रीकृष्ण को पुकारा। उसी क्षण भगवान ने उसकी रक्षा की। यह घटना बताती है कि सच्चा विश्वास कि जन्म लेती है, जब मन पूरी तरह समर्पित हो जा

विश्वास केवल धार्मिक जीवन तक सीमित न
हर क्षेत्र में सफलता की आधारशिला है। एक दिन
विश्वास होता चाहिए कि निरंतर परिश्रम से वह वि
प्राप्त करेगा। एक किसान विश्वास के साथ
है, क्योंकि उसे भरोसा होता है कि समय आने
अवसर लहलहाएगी। एक चिकित्सक विश्वास
उपचार करता है और रोगी विश्वास के साथ
करता है। यदि विश्वास समाप्त हो जाए, तो
अधिकारी गतिविधियाँ रुक जाएँगी।
आत्मविश्वास भी विश्वास का ही एक महत्वपूर्ण
जो व्यक्ति स्वयं पर विश्वास नहीं करता, वह दूस
विश्वास नहीं कर पाता। जीवन में अनेक अवसर
इसलिए हाथ से निकल जाते हैं क्योंकि हम पहले
लेते हैं कि हम सफल नहीं होंगे। जबकि सही
है कि जिन्होंने अपने ऊपर विश्वास रखा, उन्होंने
संसारभर के बावजूद महान उपलब्धियाँ प्राप्त
के अधिकारी महान व्यक्तियों ने पहले स्वयं प
किया, फिर दुनिया ने उन पर विश्वास किया।
विश्वास का सबसे सुंदर पक्ष यह है कि य
समाप्त कर देता है। जहाँ विश्वास होता है,
कम होता है। जहाँ विश्वास होता है, वहाँ ईश्वर
के लिए स्थान नहीं बचता। विश्वास मनु को पि
है और व्यक्ति को सकारात्मक दृष्टिकोण प्र
है। ऐसा व्यक्ति परिस्थितियों का दास नहीं बने
परिस्थितियों को बदलने का साहस जुटा लेता
हमें अपने जीवन में ऐसा विश्वास विकसित क
जो केवल श्रुति के समान नहीं, बल्कि दुख के
अडिग रहे। यदि प्रार्थना तुल्य स्वीकार न हो,
अर्थ यह नहीं कि ईश्वर ने हमें छोड़ दिया है।

कर रहा है। निम्नांकित ने कहा कि न अध्ययनों में यह नहीं बताया गया कि भारतीय मौनसून कैसे बदल सकता है। इसके पीछे के तंत्र को भी विस्तार में नहीं समझाया गया। उन्होंने कहा, ये अध्ययन आम तौर पर यह समझाते हैं कि अगर एएमओसी कमजोर होता है, तो यह भारतीय मौनसून को भी कमजोर करता है।

कड़ी समस्या यह है कि मौजूदा जलवायु मॉडल भारतीय मौनसून में हुए बदलावों को नहीं दिखाते हैं, क्योंकि वे उत्तरी अटलांटिक महासागर की सतह तापमान में बदलाव को भी पूरी तरह से प्रष्ट नहीं करते हैं। इन मॉडलों ने नॉर्थएटलैंड के दक्षिण-पूर्व में एक अत्यंत डोमेश्ण पर गौर नहीं किया जिसे 'कोल्ड लॉला' के नाम से जाना जाता है, जहाँ 1901 और 2021 के बीच पानी 1800 से 20 दशक के आखिर की तुलना में ज्यादा ठंडा था। कोल्ड ब्लाँच बताता है कि एएमओसी कमजोर हो रहा है क्योंकि यह उत्तरी अटलांटिक तट पहुंचने वाली गर्मी की मात्रा में कमी की ओर इशारा करता है। यह पता लगाने के लिए कि भारतीय मानसून कैसे और क्यों बदला है, हमें मौसमशास्त्रियों ने दर्जनों जलवायु मॉडलों में बारिश का डेटा, समुद्र की सतह के तापमान के रिकॉर्ड और असल ज़िंदगी के प्रसारे अवलोकन डाले। इसने पिछले 27 सालों में देखे हुए बदलावों को फिर से प्रष्ट किया। इन नतीजों से उत्तरी अटलांटिक में हुए बदलावों और मानसून में बदलावों के बीच संबंध का पता चला। यह जानने में मदद करता है कि उत्तरी अटलांटिक समुद्र की सतह के तापमान की वजह से भारतीय मानसून अजीब तरह से बताव कर रहा है, टीम ने एक सिमुलेशन (कंप्यूटर पर

के जोड़ा और हटाया।

उत्तरी अटलांटिक से पता चला कि ठंडे ब्लॉब उत्तरी अटलांटिक पर एक मजबूत एम्प्लर ग्रेडिएंट (तापमान में परिवर्तन) की दर और दिशा का पैमाना) बनाकर भारतीय मानसून को शिफ्ट कर दिया है, जो पहले में यूरेशिया के ऊपर वायुमंडल में स्ट्रीम हवाओं और प्रेशर सिस्टम पर असर डालता है। खासकर, उत्तरी अटलांटिक के ऊपर जेट स्ट्रीम तेज़ी बढ़ गई है, और पश्चिमी रूस में ख़ाराल हाई के ऊपर एक 'ब्लॉकिंग' सिस्टम जन्म ले चुका है। इससे परिणामस्वरूप भारत में मौसम सिस्टम बदल गए हैं, जो अभी वाली हवा को देश के उत्तर-पश्चिम में ओरोले जा रहे हैं और उसे दूसरे सालों को से दूर खींच रहे हैं।

मौसम एडवांसेज जर्नल में छपे नए नतीजों के अनुसार लगाने वाले को भारत और पड़ोसी देशों में मौसम के अनुमान बहुत ज्यादा बारिश और सूखे जैसी समस्याओं का अनुमान लगाने में मदद दे सकता है। कुछ शोधकर्ताओं का मानना ​​है कि भारतीय मौसम वैंशिवक बलवान है, और निष्कर्ष बिंदु (टिप्पणी) बावट है, एक इना निष्कर्ष से पता चलता है कि यह सिस्टम 1999 में एक महत्वपूर्ण सीमा पर कर गया था। तब से, हालाँकि, चीन की वजह से जेट स्ट्रीम में लगातार बदलाव हुआ है, जिससे मौसम में अचानक बदलाव आए हैं। अभी यह कहा नहीं है कि तेजी से बदलती जलवायु भारतीय मौसम कैसे बदलेगी, क्योंकि जलवायु माडल उत्तर अटलांटिक के बारे में अलग-अलग अनुमान लगाते हैं, और इनमें से बदलने के साथ-साथ दूसरे कारण भी असर डाल सकते हैं।

29 करोड़ मुस्लिमों के बीच शिव धाम, दीवारों पर रामायण की कहानी, इंडोनेशिया के 1170 साल पुराने परमब्रह्म मंदिर का जानें इतिहास

दुनिया का सबसे बड़ा मुस्लिम आबादी वाला देश। लेकिन वहाँ पर मौजूद भगवान शिव का ऐसा भव्य मंदिर है देखकर दुनिया दंग रह जाती है। यह शिव पथरो से बनी इमारत नहीं है बल्कि हजार साल पुरानी उस संस्कृतिक यात्रा का गवाही है जिसने भारत और इंडोनेशिया को आज भी एक अदृश्य धागे में बंधा रखा है। इंडोनेशिया के जवा द्रोप स्थित ब्रह्मानन शिव मंदिर इन दिनों काफी चर्चाओं में है। वजह है कि भारत का इस विश्व धरोहर मंदिर के संरक्षण और जीर्णोद्धार में सहयोग का फैसला करीब 10वीं शताब्दी में बना फ्रांसीसी मंदिर दक्षिण पूर्व एशिया का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर परिसर माना जाता है। इसका उन्चाई शिखर शैली भारतीय या वास्तुकला की याद दिलाती है। समग्र भूकंप और प्राकृतिक आपदाओं ने धरोहर को कई बार नुकसान भी पहुंचा है। लेकिन हर बार इसे फिर सनाया कोशिश की हुई है। यह मंदिर यूनेस्को विश्व धरोहर है और दक्षिण पूर्व एशिया की सबसे भव्य हिंदू वास्तुकला का नमूना भी माना जाता है। भारत और इंडोनेशिया बीच 2025 में हुए सम्झौते के तहत

राज्य ने बनाई थी। उसकी चर्चा फिर कभी लेकिन फिलाहाल यह इंडोनेशिया के मंदिरों में है। एक नई 10,000 मंदिर यहाँ पर हैं। इन 10,000 मंदिरों का भारतीय संस्कृति से गहरा नाता है। इंडोनेशिया नौसैना का आधिकारिक आदर्श वाक्य ज्वेल जयमहे (संस्कृत में वहीं राष्ट्रीय नारा है भिन्नका तंतुल इंडा जापानी ग्रंथ काकाबिन् समसेतु) में किया गया है जिसमें संस्कृत के कई शब्द हैं इंडोनेशिया के नोट पर भगवान गणेश की तस्वीर भी छपी हुई है जहां भगवान गणेश का ज्ञान और शिक्षा का प्रतीक माना माना जाता है। जकारता के बीचों-बीच रथी फोटी ऊंचे अर्जुन और श्री कृष्ण के 85 की प्रतिमा भी लगी हुई है जो शहर के सबसे प्रसिद्ध स्मारकों में से एक है। दुनिया का सबसे बड़ा मुस्लिम देश होने के बावजूद इंडोनेशिया में आज भी रामायण का मंत्रना होता है। इसे देवते के लिए हर साल यहां पर लाखों पर्यटक पहुंचते हैं। इंडोनेशिया की राष्ट्रीय पकलाना गरड़ इंडोनेशिया का नाम भी गरड़ के नाम पर रखा गया है। जिसका उल्लेख भारतीय शास्त्रों में, भारतीय वेदों में और भारतीय ग्रंथों में है। अगर कोई आपसे पूछे कि दक्षिण पूर्व एशिया का सबसे विशाल हिंदू मंदिर कौन सा है? तो जवाब होगा ब्रह्मानंद मंदिर। लेकिन इसकी पहचान सिर्फ इसके आकार से नहीं बल्कि उस अद्भुत कला और इतिहास से है जिसने इसे विश्व धरोहर बना दिया है। करीब 1100 साल पहले जावा की धरती पर ऐसा मंदिर परिसर बनाया गया जिसने भारतीय रथपत्य कला को स्थानीय परंपराओं के साथ जोड़ा और एक नई पहचान दी। मंदिर का सबसे ऊंचा शिखर भगवान शिव को अर्पित है। समर्पित है और इसकी ऊंचाई लगभग 47 मीटर माना जाती है। दूर से देखने पर लगता है कि मानो पत्थर का कोई पर्वत आसमान को छू रहा हो। जो तस्वीर आप अपनी टीवी स्क्रीन पर देख रहे हैं, वहीं है ब्रह्मानंद परिसर और मंदिर। ब्रह्मानंद परिसर में कुल सैकड़ों छोटे-छोटे बहुत सारे मंदिर हैं। इनके प्रमुख तीन विष्णु हैं। भगवान शिव का मंदिर, भगवान विष्णु का मंदिर, भगवान ब्रह्मा का मंदिर यह समर्पित मंदिर हैं। इनके सामने नंदी भी हैं, गरड़ भी हैं और हंस के मंदिर भी बने हुए हैं। मंदिर की दीवारों पर रामायण और कृष्ण का कथा की नक्काशी भारतीय संस्कृति के गहरे रिश्ते और प्रभाव को दिखाती है। पूरे इंडोनेशिया में 10,000 हिंदू देवी देवताओं के मंदिर हैं। दुनिया का सबसे बड़ा मुस्लिम आबादी का देश और उस देश में 10,000 हिंदू मंदिर मानते हैं ना भारतीय संस्कृति को। अब जब इसकी तमाम जो खासियत हैं उनका जिक्र मैं कर लेता हूँ। असल में ब्रह्मानंद मंदिर उसकी जो परिसर है निम्नूति की पूजा का प्रमुख केंद्र माना जाता है। मुख्य और सबसे बड़ा मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। इसके दाईं ओर भगवान विष्णु और बाईं ओर ब्रह्मा जिसका मैं जिक्र कर चुका हूँ।

[illegible]

समीक्षक महादेव, अमृतेश्वर महादेव, कुबेरेश्वर महादेव, रत्न महादेव, जलेश्वर महादेव, कटेश्वर महादेव महादेव के दर्शन के हैं।

अलग महत्व है। जो माने जाते हैं और करते वाले देवता इंद्रेश्वर मंदिर अपनी प्रेम के प्रतिष्ठा हैं, जो के दिन ही दर्शन महादेव महादेव महादेव मुक्ति की कामना महादेव मंदिर शिव का संदेश देता है। के प्रायश्चित्त का कुबेरेश्वर महादेव द्रव्य की प्रेरणा देते हैं। महादेव केवल धार्मिक इस यात्रा के दौरान गलियारों, ऐतिहासिक प्रमुख जीवनशैली मंदिर की स्थापत्य पदार्थ की नक़्कशी महादेव का काल का है। यह है। कई मंदिर छोटे हैं, लेकिन उनकी आध्यात्मिक गहराई तथा प्रभावित करती है। यात्रा को अद्वितीय बनाती है। यात्रा के दौरान ब्रह्मलु प्रजलाभिषेक करते हैं, बेलप्र और भागवान शिव के पंचाश्री शिष्या का जाप करते हैं। काम महामूल्येश्वर मंत्र का निरंतर ओम् बोलते हैं। कुछ लोग संकल यात्रा करते हैं, जबकि अन्य रखकर शिव आराधना में लीन मानवता है कि ब्रह्म और नियम यात्रा मन, वचन और कर्म की बनती है।

स्थानीय प्रशासन और धार्मिक संस्थाओं के लिए विस्तृत रूप सुविधा हैं। इस मार्गदर्शक में दूरी, प्रमुख मार्ग और आवश्यकता जाते हैं। सामान्यतः यात्रा आरंभ प्रारंभ होकर लोमशेश्वर महादेव है। अधिकांश मंदिर शहर के कुछ मंदिर आसपास के क्षेत्रों का कारण यात्रा की पूर्व योजना बन रहता है। यदि कोई ब्रह्मलु विधिवत पूजा-अर्चना करना चाहते हैं, तो यह संकेतों से नीति निर्धारित है। कुछ ब्रह्मलु निजी यात्रा करते हैं, जबकि अन्य भक्त

भक्तों को यात्रा के रूप में प्रक्रिया पूरी करते हैं। महाशिवरात्रि और कार्तिक मास में इस विशेष महत्त्व होता है। ई. इतनी पूरे शिवभक्ति का अद्भुत वातावरण दिखावा है। मंदिर में रूद्रभिक्ता, भजन, कोंट, शक्ति और विशेष पूजन आयोजित किए जाते हैं। 84 महादेव यात्रा के दौरान कुछ अनुसंधानकर्ता भी खोजें चाहिए। यात्रा से प्रेम प्राप्त कर लेना चाहिए। मैंमैस के वस्त्र पहनने चाहिए। पर्यटन नगर, हल्ले और आवश्यक दवाइयों साथ रखना रहता है। मंदिरों में स्वच्छता बनाए रखना एक उपयोग न करना और धार्मिक परंपराओं का सम्मान करना श्रद्धालु का कर्तव्य है। यात्रा के दौरान अनुशासन बनाए रखना भी उतनी ही जितना पूजा करना। इस यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण संदेश श्रद्धा भगवान यात्रा केवल विशाल मंदिरों में बल्कि प्रत्येक श्रद्धालु की अग्रणी में निवास है। 84 महादेवों के अलग-अलग स्वरूप के विभिन्न कारणों का प्रतिनिधित्व करती हैं। यात्रा का संदेश देते हैं, वरुण का, कहीं मर्यादा का और कहीं न्याय का। यह यात्रा केवल देवदत्त बल्कि आर्चनितन का अग्रणी भी बनता है। आधुनिक जीवन का भागदौड़ में मनुष्य जितना और संतोष से भरपूरता का रहा है।

क वसस बड़ हिंदू मंदिर प्रब्रानन पृष्ठ
भगवा कुर्ता, मंथर पत्र पिउंड और पारंपरिक
अंदाज में विधिर परिसर में प्रवेश कान
प्रधानमन्त्री मोदी को तत्करीर चर्चा का वि
बन गइ। उन्होंने अपने कंधे पर अलग त
का स्टील भी डाल रखा था। उनके स
इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबि
भी मौजूद रह। दोनों ने मंदिर के संरक्ष
जीर्णोद्धार परियोजना का उद्घाटन क
पीएम ने मंदिर में दर्शन भी किए। उन्
मंदिर परिसर में अपने संबोधन में ब
कि मुझे किसी न किसी रूप में व
भगवान शिव से जुड़ने का मौका म
है। सोमनाथ, काशी विश्वनाथ, केदारना
धम और उज्जैन के महाकाल मंदिर
बाद प्रब्रानन मंदिर के विकास का म
मिलना मेरा सौभाग्य है।
आपको बता दें कि मूल रूप से यहाँ
240 से ज्यादा मंदिर थे। समय के स
भूकंप और ज्वालामुखी विस्फोटों ने
कई बार नुकसान पहुंचाया लेकिन जो ब
है वह आज भी भव्यता के साथ खड़ा ह
है। इसकी तुलना इसकी तुलना अ
कंबोडिया के अंकुर वाई से की जाती
लेकिन ब्रह्मनांद पूरी तरह से हिंदू आ
से जुड़ा हुआ है। कंबोडिया का मंदिर
से बड़ा विशाल है। बड़ा चर्चाओं में
कहा जाता है कि हजारों की संख्या में

राज्य पुलिस महानिदेशक श्री जी. एस. मलिक, अहमदाबाद पुलिस आयुक्त श्री अनुपम सिंह गहलोत तथा पुलिस विभाग के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक आयोजित की

» उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संधवी ने रथयात्रा से पूर्व सुरक्षा व्यवस्था एवं तैयारियों की समीक्षा की

» उप मुख्यमंत्री ने रथयात्रा से पहले की सभी सुरक्षा व्यवस्थाओं, कानून एवं व्यवस्था की स्थिति तथा विभिन्न विभागों की पूर्व तैयारियों की समीक्षा की

गांधीनगर : अहमदाबाद में आगामी आषाढ़ी दूज के दिन आयोजित होने वाली भगवान जगन्नाथजी की 149वीं रथयात्रा शांतिपूर्ण रूप से सुरक्षित एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हो; इस उद्देश्य से उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संधवी की अध्यक्षता में बुधवार को उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में उप मुख्यमंत्री ने रथयात्रा से पूर्व की सभी सुरक्षा व्यवस्थाओं, कानून एवं व्यवस्था की स्थिति तथा विभिन्न विभागों की पूर्व तैयारियों की सुक्ष्मतापूर्वक समीक्षा की। उन्होंने रथयात्रा के दौरान समग्र शहर में शांति तथा सुरक्षा बनी रहे; इसके लिए पुलिस प्रशासन का पूरी तरह सज्ज रहने का आह्वान किया था। उन्होंने रथयात्रा के रूट पर कड़ा पुलिस प्रबंध करने, यातायात का सुचारु संचालन करने तथा इमर्जेंसी सेवाओं को सुदृढ़ करने के संबंध में आवश्यक मार्गदर्शन एवं सुझाव दिए। उप मुख्यमंत्री ने बैठक में रथयात्रा बंदोबस्त के आयोजन को लेकर विस्तृत चर्चा की, जिसमें अधिकारियों द्वारा कड़े संवेदनशील पॉइंट्स का दौरा, स्थानीय अग्रणियों के साथ संवाद और असाમાजिक तत्वों के विरुद्ध कड़े कदम उठाने के संबंध में विवरण प्रस्तुत किया गया।



उप मुख्यमंत्री ने टेक्नोलॉजी तथा मानव बल के उत्कृष्ट समन्वय से सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक मजबूत करने पर बल दिया। रथयात्रा पूर्ण आस्था एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में निर्विघ्न संपन्न हो; इसके लिए सभी व्यवस्थाएँ सुनिश्चित करने का उप मुख्यमंत्री ने अनुरोध किया था।

उल्लेखनीय है कि इस वर्ष रथयात्रा में सुरक्षा प्रणाली को अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए आधुनिक टेक्नोलॉजी आधारित अनेक नई परियोजनाएँ लागू की गई हैं। इनमें रथयात्रा के इतिहास में पहली बार रूट पर शामिल होने वाले हाथियों की सुरक्षा तथा लाइव लोकेशन मॉनिटरिंग के लिए 'गजरक्षक स्मार्ट ट्रैकिंग



सिस्टम' कारगरत किया जाएगा। इसके अतिरिक्त; यात्रा में शामिल होने वाले सभी ट्रकों तथा अखाड़ों के संचालकों के आधार कार्ड आधारित वेरीफिकेशन के लिए 'प्रतिरक्षा' एप्लिकेशन का उपयोग किया जाएगा और संदिग्ध तत्वों पर कड़ी निगरानी रखने के लिए 'पिनैक' सॉफ्टवेयर संचालित एआई फेस रिकग्निशन सिस्टम, हवाई सुरक्षा के लिए एंटी-ड्रोन गन तथा जैमर टीम तथा समग्र रूट पर हजारों सीसीटीवी कैमरा के नेटवर्क द्वारा लाइव सर्वेलांस की आधुनिक व्यवस्था सुनिश्चित की गई है।

उप मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में आयोजित इस महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव श्री संजीव कुमार, राज्य पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) श्री जी. एस. मलिक, अहमदाबाद पुलिस आयुक्त श्री अनुपम सिंह गहलोत, महानगर पालिका आयुक्त श्री ब्रंछानिधि पाणि, अहमदाबाद जिला कलेक्टर श्री भव्य वर्मा सहित पुलिस विभाग के उच्च पदाधिकारी तथा विभिन्न सुरक्षा एजेंसियों के अधिकारी विशेष रूप से उपस्थित रहे और उन्होंने रथयात्रा सुरक्षा के लिए व्यापक एक्शन प्लान की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की।

विकास भी, विरासत भी : श्री कृष्ण-रुक्मिणी यात्राधाम सज रहा है नए श्रृंगार 43.72 करोड़ रुपए की लागत से दूसरे चरण के विकास कार्यों का शुभारंभ

- » दूसरे चरण में माधवरायजी मंदिर के पुनरुद्धार सहित अनेक विकास कार्यों का समावेश
- » भव्य बीच फ्रंट, आधुनिक फूड कोर्ट, विशाल आउटर प्लाजा और पार्किंग का निर्माण होगा
- » श्रद्धालुओं की सुगमता के लिए सड़कें होंगी चौड़ी, मंदिर तक बनेगी एग्रोच रोड
- » अंडरग्राउंड इलेक्ट्रिकल, प्लंबिंग और स्मार्ट इरिगेशन सिस्टम से सज्ज बनेगा समग्र परिसर

गांधीनगर, 08 जुलाई : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'विकास भी, विरासत भी' के मंत्र को चरितार्थ करते हुए आज मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य का धार्मिक पर्यटन एक स्वर्णिम युग की ओर आगे बढ़ रहा है। 'विकास भी, विरासत भी' का जीवन उदाहरण बन रहा है पेरबंदर जिले का माधवपुर स्थित 'श्री कृष्ण-रुक्मिणी यात्राधाम', जहाँ भगवान श्री कृष्ण तथा माता रुक्मिणी का विवाह हुआ था। इस प्रागैतिहासिक एवं आध्यात्मिक स्थल को अब वैश्विक पटल पर जगमगाने योग्य बनाने के लिए गुजरात सरकार तथा उसके उपक्रम गुजरात पवित्र यात्राधाम विकास बोर्ड द्वारा महत्वाकांक्षी मास्टर प्लानिंग पर कार्य चल रहा है।

संपूर्ण प्रोजेक्ट अंतर्गत माधवपुर गाँव में एक-एक किलोमीटर के दायरे में स्थित सभी पौराणिक स्थलों को एक सुंदर सूत्र में पिरोया जा रहा है। प्रथम चरण में 47.99 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित मजबूत आधार पर आगे बढ़ते हुए दूसरे चरण के कार्य शुरू करने की तैयारियों की जा रही हैं। प्रथम चरण में श्री रुक्मिणी माताजी मंदिर, विवाह वेदी की साक्षी 'चोरी मायरा', पवित्र ब्रह्मकुंड तथा भव्य मुख्य प्रवेश द्वार का सफल लोकार्पण स्वयं मुख्यमंत्री द्वारा हो जा चुका है। अब दूसरे



को जा रही है।

श्रद्धालुओं को ट्रैफिक जाम से मुक्ति : 5.31 करोड़ रुपए की लागत से बनेंगे विशाल आउटर प्लाजा एवं पार्किंग

माधवपुर मेले तथा त्योहारों के दौरान उमड़ने वाली भारी भीड़ के सुगम प्रबंधन के लिए मंदिर परिसर के बाहरी भाग का सुव्यवस्थित विकास किया जा रहा है। 5.31 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाला यह विशाल आउटर प्लाजा तथा व्यवस्थित पार्किंग स्थल श्रद्धालुओं की आवाजाही को अत्यंत सरल एवं सुरक्षित बनाएंगे।

अत्याधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर : अंडरग्राउंड इलेक्ट्रिकल, प्लंबिंग और स्मार्ट इरीगेशन सिस्टम से सज्ज बनेगा समग्र परिसर

परिसर की सुंदरता में कोई अवरोध न आए; इसके लिए सभी मूलभूत लाइनों को अंडरग्राउंड किया जा रहा है। समग्र कनेक्टिविटी को नया विस्तार देने के लिए सड़क एवं भवन विभाग के नेतृत्व में महत्वपूर्ण आधारभूत कार्य शुरू हुए हैं। इसके अंतर्गत स्थानीय काचबा उधेर केन्द्र (कछुआ पालन केन्द्र) से सीधे माधवरायजी मंदिर तक पहुँचने वाले मार्ग को 9 मीटर तक चौड़ा किया जा रहा है, जिससे सैकड़ों की समस्या हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगी।

सेल्फी पॉइंट्स एवं कलात्मक मूर्तियाँ : 3.45 करोड़ रुपए से 'इंस्टाग्राम

550 वर्ष पुरानी हवेली संगीत परंपरा को मिला राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान

उस्ताद बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार-2025 के लिए हवेली संगीत के विद्वान आचार्य श्री रणछोडलालजी गोस्वामी का चयन

गांधीनगर : भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्राचीन एवं समृद्ध परंपरा में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले पुष्टिमागीय हवेली संगीत को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान प्राप्त हुआ है। केन्द्र सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन कारगरत संगीत नाटक अकादमी द्वारा वर्ष 2024 -25 के लिए घोषित उस्ताद बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार- 2025 के लिए अहमदाबाद के कालुपुर स्थित गोस्वामी हवेली की 16वीं पीढ़ी के आचार्य तथा हवेली संगीत के विद्वान आचार्य श्री रणछोडलालजी गोस्वामी का चयन किया गया है।

आचार्य रणछोडलालजी गोस्वामी इस सम्मान को अपनी व्यक्तितगत उपलब्धि से अधिक संपूर्ण हवेली संगीत परंपरा का गौरव मानते हैं। वे कहते हैं, "यह पुरस्कार भारत की भक्ति, संगीत और संस्कृति की समृद्ध परंपरा को मिला सम्मान है। हवेली संगीत में भारत की आत्मा बसती है।"

पुष्टिमागी की स्थापना महाप्रभु श्री वल्लभाचार्यजी ने लगभग 550 वर्ष पहले की थी। इस परंपरा में कीर्तन



और संगीत को भक्ति का सर्वोच्च साधन माना जाता है। आज भी हवेलियों में दिन के विभिन्न प्रहरों तथा ऋतुओं के अनुरूप विशिष्ट रागों में सेवा-कीर्तन किया जाता है। वसंत, ग्रीष्म, श्रावण और पुष्य ऋतु के लिए अलग अलग संगीत परंपरा विकसित की गई है, जो हवेली संगीत को विशिष्ट पहचान प्रदान करती है। अहमदाबाद के 450

वर्ष पुराने दोषीवाडा की पोल स्थित गोस्वामी हवेली के आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित रणछोडलालजी गोस्वामी ने गुरु-शिष्य परंपरा में संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। साथ ही उन्होंने गुजरात यूनिवर्सिटी के उपासना स्कूल ऑफ अलग संगीत परंपरा विकसित की गई है, जो हवेली संगीत को विशिष्ट पहचान प्रदान करती है। अहमदाबाद के 450

कर रहे हैं। मात्र 32 वर्ष की आयु में उन्होंने 22 हजार से अधिक भक्तिपदों की रचना की है तथा आठ पुस्तकों का सृजन किया है। वे गुजरात यूनिवर्सिटी के हवेली संगीत पाठ्यक्रम में विशेषज्ञ के रूप में भी सेवाएँ दे रहे हैं। ब्रजभाषा, गुजराती, संस्कृत के अतिरिक्त चारणी, मेवाड़ी और मारवाड़ी जैसी भाषाओं में भी उनकी रचनाएँ उपलब्ध हैं।

आचार्य के अनुसार हवेली संगीत भारतीय शास्त्रीय संगीत का मूल स्वरूप है। प्रबंध, ध्रुपद और धमार जैसी प्राचीन गायन परंपराओं से ही आगे चलकर खयाल गायकी का विकास हुआ है। हवेली संगीत में आज भी ये मूल परंपराएँ जीवंत हैं।

वे कहते हैं कि महाप्रभु श्री वल्लभाचार्यजी तथा श्री विठ्ठलाचार्यजी के समय से सूरदास, परमानंददास सहित अष्टछाप के कवियों की रचनाएँ हवेली संगीत के माध्यम से गाई जाती रही हैं। यह संगीत केवल कला का स्वरूप नहीं, बल्कि भक्ति और उपासना का जीवंत माध्यम है। आचार्य का मानना है कि यह पुरस्कार संपूर्ण वैष्णव समाज तथा

शास्त्रीय संगीत प्रेमियों के लिए गौरव का क्षण है। गुजरात और राजस्थान के अलावा मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र तथा पंजाब में भी यह परंपरा आज जीवंत है। स्वतंत्रता के बाद हवेली संगीत को इतने उच्च राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान प्राप्त होने की यह संभावना: पहली घटना है।

हवेली संगीत के संरक्षण के संबंध में वे सुझाव देते हैं कि यूनिवर्सिटी स्तर पर पूर्णकालिक पाठ्यक्रम प्रारंभ किए जाने चाहिए। आधिकारिक ग्रंथों का सृजन, अनुसंधान, दस्तावेजीकरण तथा तुलनात्मक अध्ययन को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। साथ ही युवा पीढ़ी में इस परंपरा के प्रति रुचि जागृत हो, इसके लिए सेमिनार, कार्यशालाओं तथा व्याख्यानमालाओं का आयोजन भी समय की आवश्यकता है।

पांच शताब्दियों से अधिक समय से मंदिरों की दीवारों में गुंजता हवेली संगीत का स्वर अब राष्ट्रीय मंच तक पहुंच चुका है। यह सम्मान केवल एक कलाकार का नहीं, बल्कि भारत की अमूल्य संगीत विरासत का गौरव बढ़ाने वाला एक मील का पत्थर बन गया है।



एंटी-लिटरिंग मामलों में कार्रवाई करते हुए 2.20 लाख का जुर्माना वसूला गया।

गैर-किराया राजस्व (Non-Fare Revenue) – नई पहल

» कांकारिया गुड्स शेड में एक्सेस-कंट्रोल्ड पेड पार्किंग में फ्रेट एलाइड सर्विसेज के लिए 7 वर्ष की अवधि का 20.73 करोड़ मूल्य का अनुबंध प्रदान किया गया।

» सभी गैर-प्रीमियम ट्रेनों में ट्रेन साइड वेंडिंग (TSV) के लिए 3 वर्ष की अवधि का 3.71 करोड़ मूल्य का अनुबंध प्रदान किया गया।

» ट्रेन संख्या 22961/22962 में हेडरेस्ट कवर पर विज्ञापन के माध्यम से 0.57 करोड़ का संविदात्मक राजस्व प्राप्त हुआ।

» अहमदाबाद रेलवे स्टेशन पर आधुनिक डिजिटल लॉज लॉकर सुविधा प्रारंभ की गई, जिससे यात्रियों को सुरक्षित एवं स्वचालित सामान भंडारण की सुविधा उपलब्ध हुई।

यात्री सुविधाएं (Passenger Amenities)

» ग्रीष्मकाल के दौरान विभिन्न स्टेशनों पर स्टेशन कर्मचारियों एवं स्वयंसेवी संस्थानों के सहयोग से सामान्य श्रेणी के यात्रियों के लिए शीतल पेयजल की समुचित व्यवस्था की गई।

अहमदाबाद मंडल ने जून-2026 में वाणिज्यिक क्षेत्र में रचा नया कीर्तिमान,606.43 करोड़ का सर्वाधिक मासिक माल राजस्व, 767.01 करोड़ का सकल राजस्व

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल ने जून-2026 के दौरान मण्डल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश के नेतृत्व में वाणिज्यिक क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल करते हुए माल राजस्व, पार्सल व्यवसाय, गैर-किराया राजस्व, यात्री सुविधाओं तथा टिकट जांच अभियानों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। मंडल ने विभिन्न क्षेत्रों में कई नए कीर्तिमान स्थापित किए।

माल राजस्व (Freight Business)

» जून-2026 में 606.43 करोड़ का माल राजस्व अर्जित किया गया, जो निर्धारित लक्ष्य से 3.60% तथा गत वर्ष की समान अवधि की तुलना में 13.59% अधिक है। यह वित्तीय वर्ष 2026-27 का अब तक का सर्वाधिक मासिक माल राजस्व है।

» 30 जून 2026 को 26.58 करोड़ का एक दिवसीय माल राजस्व अर्जित कर नया रिकॉर्ड स्थापित किया गया।

पार्सल व्यवसाय (Parcel Business)

» जून-2026 में 6.19 करोड़ का पार्सल राजस्व अर्जित किया गया, जो गत वर्ष की तुलना में 7.65% अधिक है।

» भुज से बांद्रा टर्मिनस तक 22 टन आम पार्सल सेवा के माध्यम से भेजा गया, जिससे एक ही दिन में 1.26 लाख का राजस्व प्राप्त हुआ।

यात्री व्यवसाय एवं कोचिंग (Passenger Business & Coaching)

» जून-2026 में 145.58 करोड़ का यात्री राजस्व अर्जित किया गया।

» अतिरिक्त भीड़ को समायोजित करने के लिए 67 विशेष रेल सेवाएँ संचालित की गईं।

» यात्रियों की सुविधा के लिए 122 अतिरिक्त कोच लगाए गए, जिससे लगभग 0.97 लाख यात्रियों को लाभ मिला तथा 10.33 करोड़ का अतिरिक्त यात्री राजस्व अर्जित हुआ।

टिकट जांच एवं स्वच्छता अभियान (Ticket Checking & Cleanliness Drive)

» जून-2026 में टिकट जांच के माध्यम से 2.70 करोड़ की आय अर्जित की गई, जो गत वर्ष की तुलना में 23.29% अधिक है।

» स्वच्छता अभियान के अंतर्गत 1,230

